Class 9th B & C

धूल

हिंदी-कविता की सबसे सुंदर पंक्तियों में से एक यह है :

'जिसके कारण धूलि भरे हीरे कहलाए।'

हीरे के प्रेमी तो शायद उसे साफ़-सुथरा, खरादा हुआ, आँखों में चकाचौंध पैदा करता हुआ देखना पसंद करेंगे। परंतु हीरे से भी कीमती जिस नयन-तारे का ज़िक्र इस पंक्ति में किया गया है वह धूलि भरा ही अच्छा लगता है। जिसका बचपन गाँव के गलियारे की धूल में बीता हो, वह इस धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना कर ही नहीं सकता। फूल के ऊपर जो रेणु उसका शृंगार बनती है, वही धूल शिशु के मुँह पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है। अभिजात वर्ग ने प्रसाधन-सामग्री में बड़े-बड़े आविष्कार किए, लेकिन बालकृष्ण के मुँह पर छाई हुई वास्तविक गोधूलि की तुलना में वह सभी सामग्री क्या धूल नहीं हो गई?

हमारी सभ्यता इस धूल के संसर्ग से बचना चाहती है। वह आसमान में अपना घर बनाना चाहती है, इसलिए शिशु भोलानाथ से कहती है, धूल में मत खेलो। भोलानाथ के संसर्ग से उसके नकली सलमे-सितारे धुँधले पड़ जाएँगे। जिसने लिखा था–"धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की," उसने भी मानो धूल भरे हीरों का महत्त्व कम करने में कुछ उठा

Scanned with CamScanner

न रखा था। 'धन्य-धन्य' में ही उसने बड़प्पन को विज्ञापित किया, फिर 'मैले' शब्द से अपनी हीनभावना भी व्यंजित कर दी, अंत में 'ऐसे लरिकान' कहकर उसने भेद-बुद्धि का परिचय भी दे दिया। वह हीरों का प्रेमी है, धूलि भरे हीरों का नहीं।

शिशु भोलानाथ के संसर्ग से तो 'मैले जो करत गात' की नौबत आई, अखाड़े की मिट्टी में सनी हुई देह से तो कहीं उबकाई ही आने लगे। जो बचपन में धूल से खेला है, वह जवानी में अखाड़े की मिट्टी में सनने से कैसे वंचित रह सकता है? रहता है तो उसका दुर्भाग्य है और क्या! यह साधारण धूल नहीं है, वरन् तेल और मट्ठे से सिझाई हुई वह मिट्टी है, जिसे देवता पर चढ़ाया जाता है। संसार में ऐसा सुख दुर्लभ है। पसीने से तर बदन पर मिट्टी ऐसे फिसलती है, जैसे आदमी कुआँ खोदकर निकला हो। उसकी माँसपेशियाँ फूल उठती हैं, आराम से वह हरा होता है, अखाड़े में निर्द्वंद्व चारों खाने चित्त लेटकर अपने को विश्वविजयी लगाता है। मिट्टी उसके शरीर को बनाती है क्योंकि शरीर भी तो मिट्टी का ही बना हुआ है।

शरीर और मिट्टी को लेकर संसार की असारता पर बहुत कुछ कहा जा सकता है परंतु यह भी ध्यान देने की बात है कि जितने सारतत्त्व जीवन के लिए अनिवार्य हैं, वे सब मिट्टीसे ही मिलते हैं। जिन फूलों को हम अपनी प्रिय-वस्तुओं का उपमान बनाते हैं, वे सब मिट्टी की ही उपज हैं। रूप, रस, गंध, स्पर्श—इन्हें कौन संभव करता है? माना कि मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में। मिट्टी की आभा का नाम धूल है और मिट्टी के रंग-रूप की पहचान उसकी धूल से ही होती है।

ग्राम-भाषाएँ अपने सूक्ष्म बोध से धूल की जगह गर्द का प्रयोग कभी नहीं करतीं। धूल वह, जिसे गोधूलि शब्द में हमने अमर कर दिया है। अमराइयों के पीछे छिपे हुए सूर्य की किरणों में जो धूलि सोने को मिट्टी कर देती है, सूर्यास्त के उपरांत लीक पर गाड़ी के निकल जाने के बाद जो रुई के बादल की तरह या ऐरावत हाथी के नक्षत्र-पथ की भाँति जहाँ की तहाँ स्थिर रह जाती है, चाँदनी रात में मेले जानेवाली गाड़ियों के पीछे जो कवि-कल्पना की भाँति उड़ती चलती है, जो शिशु

Scanned with CamScanner

के मुँह पर, फूल की पंखुड़ियों पर साकार सौंदर्य बनकर छा जाती है—धूल उसका नाम है।

गोधूलि पर कितने कवियों ने अपनी कलम नहीं तोड़ दी, लेकिन यह गोधूलि गाँव की अपनी संपत्ति है, जो शहरों के बाटे नहीं पड़ी। एक प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता के निमंत्रण-पत्र में गोधूलि की बेला में आने का आग्रह किया गया था, लेकिन शहर में धूल-धक्कड़ के होते हुए भी गोधूलि कहाँ? यह कविता की विडंबना थी और गाँवों में भी जिस धूलि को कवियों ने अमर किया है, वह हाथी-घोड़ों के पग-संचालन से उत्पन्न होनेवाली धूल नहीं है, वरन् गो-गोपालों के पदों की धूलि है।

'नीच को धूरि समान' वेद-वाक्य नहीं है। सती उसे माथे से, योद्धा उसे आँखों से लगाता है, युलिसिस ने प्रवास से लौटने पर इथाका की धूलि चूमी थी। यूक्रेन के मुक्त होने पर एक लाल सैनिक ने उसी श्रद्धा से वहाँ भी धूल का स्पर्श किया था। श्रद्धा, भक्ति, स्नेह इनकी चरम व्यंजना के लिए धूल से बढ़कर और कौन साधन है? यहाँ तक कि घृणा, असूया आदि के लिए भी धूल चाटने, धूल झाड़ने आदि की क्रियाएँ प्रचलित हैं।

धूल, धूलि, धूली, धूरि आदि की व्यंजनाएँ अलग-अलग हैं। धूल जीवन का यथार्थवादी गद्य, धूलि उसकी कविता है। धूली छायावादी दर्शन है, जिसकी वास्तविकता संदिग्ध है और धूरि लोक-संस्कृति का नवीन जागरण है। इन सबका रंग एक ही है, रूप में भिन्नता जो भी हो। मिट्टी काली, पीली, लाल तरह-तरह की होती है, लेकिन धूल कहते ही शरत् के धुले-उजले बादलों का स्मरण हो आता है। धूल के लिए श्वेत नाम का विशेषण अनावश्यक है, वह उसका सहज रंग है।

हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे। किसान के हाथ-पैर, मुँह पर छाई हुई यह धूल हमारी सभ्यता से क्या कहती है? हम काँच को प्यार करते हैं, धूलि भरे हीरे में धूल ही दिखाई देती है, भीतर की कांति आँखों से ओझल रहती है, लेकिन ये हीरे अमर हैं और एक दिन अपनी अमरता का प्रमाण भी देंगे। अभी तो उन्होंने अटूट होने का ही प्रमाण दिया है—"हीरा वही घन चोट न टूटे।" वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा। तब हम हीरे से लिपटी हुई धूल को भी माथे से लगाना सीखेंगे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए–

1. हीरे के प्रेमी उसे किस रूप में पसंद करते हैं?
2. लेखक ने संसार में किस प्रकार के सुख को दुर्लभ माना है?
3. मिट्टी की आभा क्या है? उसकी पहचान किससे होती है?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए–

1. धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती?
2. हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती है?
3. अखाड़े की मिट्टी की क्या विशेषता होती है?
4. श्रद्धा, भक्ति, स्नेह की व्यंजना के लिए धूल सर्वोत्तम साधन किस प्रकार है?
5. इस पाठ में लेखक ने नगरीय सभ्यता पर क्या व्यंग्य किया है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए–

1. लेखक 'बालकृष्ण' के मुँह पर छाई गोधूलि को श्रेष्ठ क्यों मानता है?
2. लेखक ने धूल और मिट्टी में क्या अंतर बताया है?
3. ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के कौन-कौन से सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है?
4. 'हीरा वही घन चोट न टूटे'– का संदर्भ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
5. धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाओं को स्पष्ट कीजिए।
6. 'धूल' पाठ का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।
7. कविता को विडंबना मानते हुए लेखक ने क्या कहा है?

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए–

1. फूल के ऊपर जो रेणु उसका श्रृंगार बनती है, वही धूल शिशु के मुँह पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है।
2. 'धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान' इन पंक्तियों द्वारा क्या कहना चाहता है?
3. मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में।

5 / 7

Scanned with CamScanner

4. हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे।
5. वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग छाँटिए–
   उदाहरण: *विज्ञापित– वि (उपसर्ग) ज्ञापित*
   संसर्ग, उपमान, संस्कृति, दुर्लभ, निर्द्वंद्व, प्रवास, दुर्भाग्य, अभिजात, संचालन।
2. लेखक ने इस पाठ में धूल चूमना, धूल माथे पर लगाना, धूल होना जैसे प्रयोग किए हैं। धूल से संबंधित अन्य पाँच प्रयोग और बताइए तथा उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

योग्यता-विस्तार

शिवमंगल सिंह सुमन की कविता 'मिट्टी की महिमा', नरेश मेहता की कविता 'मृत्तिका' तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की 'धूल' शीर्षक से लिखी कविताओं को पुस्तकालय में ढूँढ़कर पढ़िए।

परियोजना कार्य

इस पाठ में लेखक ने शरीर और मिट्टी को लेकर संसार की असारता का ज़िक्र किया है। इस असारता का वर्णन अनेक भक्त कवियों ने अपने काव्य में किया है। ऐसी कुछ रचनाओं का संकलन कर कक्षा में भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

शब्दार्थ एवं टिप्पणियाँ

खरादा हुआ – सुडौल और चिकना बनाया हुआ
रेणु – धूल
शृंगार – सजावट
पार्थिवता – पृथ्वी से संबंधित, मिट्टी संबंधी
अभिजात – कुलीन
प्रसाधन सामग्री – शृंगार की सामग्री
गोधूलि – सायंकाल जंगल से लौटते समय गायों के खुर से उड़ती हुई धूलि
संसर्ग – संपर्क
कनिया – गोद
विज्ञापित – सूचित

Scanned with CamScanner

लरिकान	-	बच्चे
नौबत	-	हालत
सिझाई	-	पकाई हुई
निर्द्वंद्व	-	जहाँ कोई द्वंद्व न हो, जिसका कोई विरोधी न हो
असारता	-	साररहित, जिसका कोई सार न हो
सूक्ष्मबोध	-	बातों की गहराई को समझने की क्षमता
अमराइयों	-	आम के बाग
नक्षत्र पथ	-	नक्षत्रों का मार्ग
विडंबना	-	छलना, विसंगति
बाटे	-	हिस्से
नीच को धूरि समान	-	धूल के समान तुच्छ कौन है
यूलिसिस	-	होमर के महाकाव्य 'ओडेसी' का एक प्रमुख पात्र जो कठिनाइयों से संघर्ष करनेवाले व्यक्ति का प्रतीक बन गया है
प्रवास	-	परदेश वास
इथाका	-	यूनान का एक स्थान
यूक्रैन	-	एक देश
व्यंजना	-	शब्द की वह वृत्ति या शक्ति जिससे उसके सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ का बोध होता है
असूया	-	ईर्ष्या
छायावादी दर्शन	-	प्रकृति और सृष्टि के रहस्यों को अति गूढ़ भावों में व्यंजित करना
संदिग्ध	-	जिसमें संदेह हो
कांति	-	चमक

Monika Yadav

TGT (Hindi)

Scanned with CamScanner